मानव एकता

(तर्जः कई जन्मों से कई सदियों से)

अपनेपन का भाव जगाने
मानव एकता को फैलाने
धरती पे आए गुरूबचन ....आए.....
आए कि मानवता का महकेचमन.....अपनेपन...

बिघडी रूहों को रब्ब से मिला
इस एकप्रभु के दरस करा
हर भेदभाव को जड से मिटा
लाए फिर से जीवन में चैन ....ओ....अमन
आए- आए किमानवता का महके चमन.....

बन्धन में न भरमो में कोई रहे
मिलजुल केसुख दुःख सारे सहे
घर -घर में प्यार की गंगा बहे
और चारों ओर हो मिलवर्तन
गाए -गाए नम में मानवता केहर इक मन .....अपनेपन....

मानवता को जीवन दान दिया, सच्चाई को यूँ सन्मान दिया
दिलवर जीवन बलिदान दिया
आए- आए बन मसीहा लेकर नवजीवन
अपनेपन का भाव जगाने.....